दैनिक भास्कर 30 May 2021, Lucknow - 30 May 2021 - Page 6

विकसित देश व सभ्य समाज का दर्पण ...

स्वस्थ व सुरक्षित महिलाएं

गीतांजलि सक्सेना

हम आज में चलते रहे, भूल गये सब खुशी नाखुशी, बीते सब गम, खोये अपने, उनका साथ, छूटतीं सब यादें, नजरअन्दाज करते हर पल, हर हाल में सब के साथ, आज में ही चलते रहे, अनेकों नापसंद इच्छाओं को स्वीकारते ... मुस्कुराते ... बस आज में यूँ ही चलते रहे। खुद के सपने न देखें, सब के सपनों के साथ, बस सफर जिन्दगी में हंसते चलते रहें। न चाहा किसी से कुछ, हर शख्स को खुशी देते, आज में जीयें, मान अपमान ताक में रख, सब के सुखदुख में ही बहते रहें, अपनी भावनाओं से छेड़छाड़ करते, दिल और दिमाग के द्वंदों के साथ, हर चुनौती का सामना बस ... आज की जरूरत मानकर, हर सम्भव कोशिश करते, बस लड़ते रहें, यश अपयश है, सब विधि हाथ, है जीवन की यही सच्चाई। हर पड़ाव में बस यूं ही संघर्ष करते रहें, बस है खफा ईश्वर से, नाराजगी किसी और से नहीं, यूं ही आज में चलते रहें।

कुछ साल पहले मां की लिखी हुई उपयुक्त पंक्तियाँ ...आज की वर्तमान स्थिति का सटीक वर्णन और उनके जीवन का अनुभव हर महिला को प्रेरित करता है। इसका जिक्र करना मुझे उचित इसलिए लगा, क्योंकि कोरोना की लड़ाई में वह स्वयं योद्धा बनीं। देश में मचे कोरोना तांडव ... को आज के परिप्रेक्ष्य में व वर्तमान परिस्थितियों में भी मां की भावनाओं को तस्वीर में उतारकर देखें तो उस पीड़ा का अहसास किया जा सकता है।

कोरोना महामारी की लड़ाई में भी महिलाओं की भागीदारी है

इस कोरोना महामारी की लड़ाई में लड़ रही हर एक महिला योद्धा आगे बढ़कर जिस तरह से इस दौरान हर मोर्चे पर अपनी सेवाएं प्रदान करने में जुटी हुई है, वह अद्भुत मिसाल है नारी का। वे अपनी नेतृत्व क्षमता से पूरे समर्पित भाव में दूसरों के दुखों और उनके दुखड़े को सुनने और उन्हें सुकून पहुंचाने की कोशिश कर रही हैं। दुनियाभर में फैला यह समाज का वह वर्ग है, जिसके निःस्वार्थ सेवा व प्रेम भाव की वजह से मानवता का परचम लहरा रहा है। यही नहीं सृष्टि का सन्तुलन बनाए रखने की जिम्मेवारी भी इन्हीं कंधों पर है। समाज के प्रति उनका भावात्मक नजरिया और जीने के अन्दाज के विभिन्न पहलुओं से देश पर आये संकटों से लड़ने के लिए हमें ऊर्जा मिलती है। इसका सकारात्मक प्रभाव हमें दिशानिर्देश जारी करता है और हर व्यक्ति को काम करने में मदद भी मिलती है।

यहां अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस 2021 में संयुक्त राष्ट्र संघ की थीम नेतृत्व में महिलाओं पर प्रकाश डालना सुखद प्रयास है। कोविड 19 दुनिया में चूज टू चैलेंज थीम के तहत ... हर एक को समान भविष्य

निःस्वार्थ सेवाभाव

प्राप्त करना रखा है। यह इस बात को ध्यान उजागर करता है कि दुनिया भर में लड़कियों और महिलाओं के स्वास्थ्य की देखभाल करना और समाज में महिलाओं को बराबरी का अधिकार देना व उनकी भागीदारी को बढ़ावा देने पर जोर देने का लक्ष्य रखा गया है। कई देशों में लिंग संतुलन हासिल करने की ओर तेजी से बढ़ भी रहे हैं। यह सराहनीय है।

यूँ तो दुनिया भर में हर देश अपने तरीके से इसे महिला दिवस के रूप में वार्षिक उत्सव की तरह मनाते हैं, जिस दौरान महिलाओं की सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक उपलब्धियों को और उनके काम करने के अन्दाज को सराहना और समझना अत्यंत महत्वपूर्ण रहता है। महिलाओं को समर्पित उनको प्रशंसा के लिए यह विशेष दिन इसलिए है क्योंकि इस दिन उन्हें समाज में अपने अस्तित्व की पहचान का अहसास कराया जाता है। महिलाओं के व्यक्तिगत और उनके प्रोफेशनल लक्ष्यों को पूरा करने में उनकी लगन और मेहनत को स्वीकृति प्रदान करने का खास दिन होता है। यही नहीं, उनके द्वारा किए सभी सफल कार्यों और प्रयासों को सम्मानित करने का भी चलन है। कई देशों में तो इस दिन महिलाओं के पक्ष में आंदोलन या मार्च सहित विभिन्न कार्यक्रमों में उनकी समस्याओं को लेकर झंडा लहराया जाता है।

यहां इतिहास के पन्नों से ... अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के दिलचस्प पहलुओं पर नजर डालें, तो समझा जा सकता है। 1908 में शुरू हुआ महिलाओं के संघर्ष का सफर आज भी उस मुकाम पर नहीं पहुंचा है, जिसकी महिलाएं हकदार हैं। इसकी शुरुआत उस समय तकरीबन 15000 महिलाओं ने न्यूयॉर्क शहर में वोटिंग अधिकारों की मांग, काम के घंटे कम करने और पुरुषों के समान वेतन मिलने के लिए मार्च निकाला था। एक साल बाद 1909 में ही अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी की घोषणा के बाद 28 फरवरी को पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाने का सुझाव 1910 में जर्मनी की सोशल लीडर क्लारा जेटकिन ने महिलाओं को अपनी माँगों को बढ़ाने के अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर मनाने पर जोर दिया। इस कान्फ्रेंस में 17 देशों की लगभग 100 महिलाओं की उपस्थिति में महिला दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त हुआ। उस समय इसका प्रमुख उद्देश्य महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिलवाना था, क्योंकि उस समय अधिकांश देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। समाजवादी और साम्यवादी देशों में आंदोलन अपनाने से इसका दायरा बढ़ता गया। पहली बार स्विट्जरलैंड, आस्ट्रिया, डेनमार्क व जर्मनी में जूलियन कैलेंडर के अनुसार, 19 मार्च साल 1911 को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने महिला दिवस को आधिकारिक मान्यता प्राप्त होते ही महिला दिवस को अब 8 मार्च को वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। उसकी पहली थीम थी सेलिब्रेटिंग द पास्ट, प्लानिंग फॉर द फ्यूचर के साथ मनाने का चलन शुरू हो गया। महिला दिवस का सफरनामा हमेशा से ही चुनौतियों से भरा संघर्षपूर्ण रहा।

आज भी महिलाओं को समाज में अपनी पहचान बनाने और स्थिति सुनिश्चित और सुरक्षित करने के लिए अनेक मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। आज देश की चरमराती अर्थव्यवस्था में कोरोना ने निःसंदेह आग में घी डालने का काम ही किया है। यही नहीं सामाजिक व्यवस्थाओं के प्रतिनिधियों का रवैया, उनकी रूढ़िवादी सोच महिलाओं के हितों की रक्षा में उठाये कदमों में बाधक भी बने हुए हैं। बस महिलाओं के सम्मान में मनाने वाले दिवसों के जाते ही ... उनकी ओर ध्यान हटाना सबसे सरल रास्ता अपनाना मनुष्यों की प्रकृति का एक हिस्सा बना हुआ है। महिलाओं के पलड़े में हमेशा से ही अधिक चुनौतियां बिन चाहे और बिन मांगे उनकी झोली में भरी ही रहती हैं। हर स्थिति में महिलाओं के सहयोग के बिना चाहे समाज हो या देश, एक सुन्दर और सुदृढ़ व्यवस्था की कल्पना नहीं की जा सकती है।

वर्तमान स्थिति में कोरोना काल में भी नारी ने साहस का परिचय दिया है, जो कि आश्चर्यजनक और प्रशंसनीय है। महिलाओं की भागीदारी के बिना कोई भी कार्य पूर्ण होना सम्भव नहीं है। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए मीलों दूर सफर तय करने के लिए आज भी हर महिला मुस्तैदी से तैयार है। यह भी सच है, लड़ना उसकी फितरत और विजयी हासिल करना उसकी आदत।

चलो एक दिवस ही सही, उनके सम्मान व नमन को यह समर्पित,

अभी बहुत कुछ कर गुजरना है, हर उस रास्ते चल कर जाना है,

जहाँ चुनौतियाँ कर रहीं प्रतीक्षा हमारी, सफलता के लिए मीलों चलेंगे,

नारी अस्तित्व ही, है मनुष्य की पहचान, मातृ दिवस का सही मायने बूझो,

कोई दिवस नहीं मोहताज उसका, कोई तरीका नहीं, हम आभार कर सकें।